उपसंहार

उपसंहार

"चंद्रगुप्त विद्यालंकार : जीवन तथा साहित्य"

हिंदी साहित्य के राष्ट्रप्रेमी रचनाकार चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी बचपन से ही प्रतिभासंपन्न एवं संवेदनशील व्यक्तित्व के थे । स्वभाव से वे जिंदादिल घुमक्कड, मित्रप्रेमी, शौकीन ,हँसमुख तथा गुसैल स्वभाव के थे । उनके स्वभाव तथा जीवन पर गुरूकुल के वातावरण का काफी प्रभाव रहा । साथ ही विभाजन की त्रासदी का भी उन्हें कटु अनुभव मिला । उनका संपूर्ण साहित्य उनके अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है । अपना भोगा हुआ यथार्थ ही उनके साहित्य में प्रकट हुआ है। अपने वैवाहिक जीवन में वे सफल रहें । जिंदगी के प्रति उन्होंने किसी भी प्रकार की कोई शिकायत नहीं की । आये हुए कठिन प्रसंगों का डटकर मुकाबला किया । वे राष्ट्रप्रेमी, कला प्रेमी, संस्कृति प्रेमी तथा संवेदनशील थे । उन्होंने जीवन यापन के लिए पत्रकारिता को चुना था । कलाप्रेमी होने कारण पत्रकारिता को भी एक कला के रूप में विकसित करने का उन्होंने भरसक प्रयत्न किया । कला का संबंध जीवन से जोड़ने का उन्होंने सफल प्रयत्न किया । साहित्य क्षेत्र में उनकी अपनी स्वतंत्र मान्यताएँ एवं विचार रहे । हिंदी के अच्छे प्रचारक प्रसारक और हिंदी प्रेमी के रूप में उनकी ख्याती रही । हिंदी मिशनरी के सच्चे सेवक के रूप में उन्होंने हिंदी की आजन्म सेवा की ।उन्होंने सफल पत्रकार एवं संपादक के रूप में भी काम किया ।

साहित्य लेखन में उनकी बचपन से ही रूचि थी । उनका साहित्य अंत:प्रेरणा से उपजा हुआ था अत: उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है । उन्होंने साहित्यक्षेत्र में नाटक, एकांकी, जीवनी तथा संस्मरण के साथ-साथ सफल अनुवादक के रूप में भी कार्य किया । वे नाटककार की अपेक्षा कहानीकार के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध रहें । आंतर्राष्ट्रीय स्थिति के गहरे अध्येता थे । चंद्रगुप्त जी संवेदनशील हृदय के थे । उन्होंने प्राचीन तथा ऐतिहासिक भारत के सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्थिति का गहरा अध्ययन और वर्तमान स्थिति के अनुभव पर आधारित राष्ट्रीय तथा सामाजिक संवेदना से ओतप्रोत साहित्य का सृजन किया ।

विवेच्य नाटकों का विषयगत विवेचन

चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी का पहला नाटक " अशोक " मौर्यकालीन सम्राट अशोक के जीवन की कुछ पूर्व घटनाओं और कुछ कल्पित प्रसंगों को आधार बनाकर लिखा गया है । जिसमें उन्होंने वर्तमान स्थिति का लेख जोखा प्रस्तुत किया है । " रेवा " नाटक का कथानक इतिहास प्रसिद्ध महान हिंदु सम्राट यशोवर्मा और चोलवंश के जीवन की कुछ सत्य घटना को आधार मानकर लिखा है इसमें सामाजिक, राजकीय और सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण हुआ है । इसके जरिए वे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दोषों को हटाकर आदर्श का समर्थन करते हैं । वे सांस्कृतिक लेन-देन के हिमायती भी थे ।

उन्होंने शिव-पार्वती की पौराणिक कथा को आधार मानकर " देव और मानव " का सृजन किया ।यह नाटक अनुपलब्ध है । नाटक कोश में प्राप्त कथानक के आधार यह नाटक भी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करता है । वर्तमान दुषित सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थिति पर आधारित " न्याय की रात " स्वातंत्र्योत्तर भारत की सोचनीय सामाजिक तथा राजनीतिक अव्यवस्था का यथार्थ चित्रण करता है ।

" विवेच्य नाटकों में राष्ट्रीय संवेदना

चंद्रगुप्त जी राष्ट्रवादी , देशप्रेमी और संवेदनशील साहित्यिक होने के कारण उनके नाटकों में राष्ट्रीय संवेदना-बोधप्राप्त है । किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला बोध, दु:ख, सहानुभूति या अनुभव ही संवेदना है । राष्ट्र से संबंधित समस्याओं को अनुभूत करना ही राष्ट्रीय संवेदना है तथा उन समस्याओं से बोध लेकर उनमें कुछ सुधार करने के लिए प्रेरित होना ही राष्ट्रीय संवेदना-बोध है । समस्या हमारे देश की समाज की तथा व्यक्ति की वेदना है जिससे संवेदना प्रकट होती है ।हर चीज़ का अभाव संवेदना का उगमस्थान होता है फिर चाहे वह चीज अर्थ का अभाव हो या मानवीयता का अभाव (अमानवीयता) हो, एकता, एकात्मता और राष्ट्रप्रेम का अभाव हो या संस्कृति और सभ्यता का अभाव हो, वहाँ संवेदना जन्म लेती है ।

विद्यालंकार जी ने अपने नाट्य-साहित्य मेंदेश की विविध समस्याएँ ,अभाव, व्यथा और वेदनाओं को समझकर उन्हें स्पष्ट कर दिया है तथा उनको सुलझाने के उपाय भी बताए हैं । राष्ट्र से संबंधित सभी चीजें राष्ट्रीय है, अतः राष्ट्रीयता , राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता ,एकात्मता ये राष्ट्रीय संवेदना के आधारस्तंभ हैं । विद्यालंकार जी के नाटकों में राष्ट्रीय संवेदना इन सब के

अभावों का मूल है । इन अभावों के कारण देश हर बार संकट में आया है तथा उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है । यह अहसास भी एक राष्ट्रीय संवेदना ही है । चंद्रगुप्त जी के नाटकों में राष्ट्रीय संवेदना यत्र–तत्र–सर्वत्र दिखाई देती है ।उनके नाटकों में राष्ट्रीय संवेदना जिन कारणों से दिखाई देती है वे कारण हैं उनका अपना देश के प्रति गहरा प्रेम और जनमानस में उसकी अपेक्षा तथा देश की विभिन्न समस्याएँ । अनेक समस्याओं के कारण देश जर्जर हो रहा है, यह समझो कि आजादी के बाद देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है । स्वातंत्र्योत्तर भारत में जो समस्याएँ सामने आयी है उन पर बहुत सारे लोगों का ध्याननहीं गया है या गया भी हो तो उस पर कुछ ठोस उपाय किसी ने नहीं किये हैं । स्वयं विद्यालंकार जी की यह अनुभूति (संवेदना) थी । इसलिए उन्होंने नाट्यसाहित्य के माध्यम से समस्याएँ ,समस्याओं के कारण ,अभाव और अभावों की पूर्ति तथा उपायों को भी व्याख्यायित किया है । भारत के सामने जो समस्याएँ खड़ी हुई हैं वे हैं – राष्ट्रीयता का अभाव, प्रातीयता की भावना, साम्प्रदायिकता , भ्रष्टाचार, बेकारी, बढ़ती हुई आबादी, नागरिकों की संकिर्ण मनोभावना, आस्थाहीनता तथा मूल्यहीनता । इन समस्याओं को सुलझाने के लिए आवश्यक है – विश्वबंधुता, अहिंसा ,शांति और राष्ट्रीयता । इनकी प्रतिष्ठापना केलिए नाटककार उपाय बताते हैं कि सरकारी मशीनरी के कल–पुर्जे पूरी तरह निर्दोष होने चाहिए, देश का शासनतंत्र अत्यंत मजबूत हो और देश की जनता जागरूक (संवेदनशील) रहे ।

चंद्रगुप्त जी ने अपने राजनीतिक नाटक "न्याय की रात " में राष्ट्र की अनेक समस्याओं को स्पष्ट कर दिया है । अशिक्षा, निरक्षरता और कमजोर स्वास्थ्य का शिकार हुई जनता तथा ऐसी परिस्थिति में हेमंत जैसे स्वार्थी नेता, सदानंद जैसे भ्रष्ट अधिकारी जनता को धर्म जाति, भाषा तथा प्रांत के नाम पर आपस में लड़वाते हैं और अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हैं । ऐसे नेता और अफसर न देश का विचार करते हैं और न किसी अन्य भले–बुरे का । परिणामतः आज देश की शांति ,एकता, अखंड़ता तथा उन्नति में लाखों बाधाएँ आ पहुँची हैं । देश का धीरे–धीरे हर प्रकार से पतन हो रहा है । आज खुशामद पक्षपात और तिकड़मबाजी का दौर चल रहा है । जुगलकिशोर जैसे सुयोग्य व्यक्ति कीकदर नहीं होती । और अयोग्यों की पैसों के बलबूते तरक्की की जाती है । इसी कारण एक तरफ बेकारी आसमान छू रही है और दूसरी तरफ राष्ट्र का विकास तकरीबन ठप्प होता जा रहा है ।

अपने ऐतिहासिक नाटक " अशोक " में नाटककार विद्यालंकार जी ने कर्तव्यशीलता का

पाठ पढ़या है । युवराज सुमन राजनैतिक कर्तव्य को व्यक्तिगत चाह से ऊपर की चीज मानता है । नाटककारने यही आदर्श आज के स्वार्धान्ध राजनीतिक लोगों के सामने रखा है । उनके अनेक पात्र आदर्शवादी मिलते हैं । हृदयपरिवर्तन, कर्तव्यशीलता , आत्मबलिदान और राष्ट्रप्रेम की भावनाने संपूर्ण नाटक को राष्ट्रीय संवेदना से ओतप्रोत और आदर्शवादी बनाया है । यह आज के नेता , समाजसेवक , अफसर और देश के नागरिकों के लिए प्रेरणादायी है । " रेवा " में भारतीय संस्कृति का गौरवगान किया है । मकरंद , गोविंद तथा इंदिरा आदि पात्र भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं । इनके जरिए भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार, विकास एवं संवर्धन की भावना को उजागर किया है इनमें भारतीय संस्कृति के आदर्शवादी दर्शन होते हैं । यहाँ स्वार्थत्याग, आत्मबलिदान तथा कर्तव्यशीलता का राष्ट्रीय–सांस्कृतिक आदर्श दिखाया है । राष्ट्रहित के लिए स्वहित को त्याग देने की राष्ट्रीय भावना यहाँ दृष्टिगोचर होती है । ये भावनाएँ ही राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग देती है । राष्ट्रप्रेम के स्रोत की बहती हुई धारा भातृप्रेम , पितृप्रेम, मित्र प्रेम, मनुष्य प्रेम तथा देशप्रेम इन सभी में स्थित है । उसका प्रवाह कहीं रूक ना जाए यही बोध राष्ट्रीय संवेदना के रूप में यहाँ मिलता है ।ये नाटक राष्ट्रीय संवेदना से परिपूर्ण हैं ही इसके साथ–साथ सामाजिक और सांस्कृतिक संवेदना इनमें कूट–कूट **कर** भरी हुई है ।

विवेच्य नाटकों में सामाजिक संवेदना

चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के पास संवेदनाशील करूणाद्रवित हृदय था । उनमें सूक्ष्म निरीक्षण की क्षमता थी । उन्होंने समाज के सुख–दुख की तीव्र अनुभूति को ग्रहण किया था । नाटककारने अपने नाटकों में सामाजिक यथार्थ को संवेदनात्मक स्तर पर पूरी सच्चाई और ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है । उन्होंने " अशोक " और "रेवा " नाटक में भारतीय संस्कृति और उसकी श्रेष्ठता ,धर्म, आचार विचार, नीति–अनीति , मित्रता–शत्रुता आदि सामाजिक बातों को स्पष्ट कर दिया है । राज्य और राज्यसंचालन की तकनीक , शासकों के कर्तव्य, युद्ध के प्रति एक अलग दृष्टिकोण आदि बातों को सही ढंग से प्रस्तुत किया है । उनके नाटक मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखने–परखने और व्यवहार करने, उसे आदर्श नागरिक बनाने तथा उसमें सामाजिक आदर्श के रूपों को अर्थात सत्य, अहिंसा , परोपकार, सेवा, त्याग तथा मानवीयता की भावना आदि को जगाने का बोध पूर्व उपदेश करते हैं ।

"न्याय की रात " नाटक में उन्होंने समाज में फेले हुए भ्रष्टाचार , चरित्रहीनता, शोषण और हिंसा की प्रवृत्ति आदि का यथार्थ चित्रण किया है । वे यहाँ कुछ ईमानदार , सुशिक्षित , देशप्रेमी , समाज कल्याणकारी और सभ्य पात्रों का आदर्श हमारे सामने रखते हैं । बिगड़े हुए तथा राह भटके हुए लागों के हृदयपरिवर्तन हेतु महान समाजसेवी महामानव की आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुए वे हृदयपरिवर्तन की भावना पर विश्वास करते हैं यही एक सामाजिक सुव्यवस्था के निर्माण का तथा मानवकल्याण का मार्ग है । नाटककार अपने नाटकों में आशा की एक नई किरण दिखाता है और सुखद स्वर्णिम भविष्य की ओर संकेत करता है । चंद्रगुप्त जी के नाटक यथार्थ बोध को संवेदनात्मक स्तर पर अनुभूति करानेवाले नाटक हैं । ये नाटक समाज में ऐसे व्यक्ति की प्रतिष्ठापना करना चाहते हैं जो सामाजिक विद्रूपताओं , सड़ाधताओं, बर्बरताओं, जटिलताओं, बेईमानी तथा अनैतिकता के प्रति बगावत करके स्वस्थ और मजबूत सामाजिक व्यवस्था का निर्माण कर सकें । उन्होंने अपने नाटकों में व्यक्ति को केन्द्र में रखकर समाज की रूपरेखा तैयार कर यथार्थ को आधार बनाते हुए आदर्श का निर्माण किया । उन्होंने मनुष्यत्व को महत्त्व दिया तथा सामाजिक अन्याय और अत्याचार का विरोध करनेमें सक्षम नाट्य–साहित्य का सृजन किया । विद्यालंकार जी ने समाज की समस्त अच्छाई बुराई तथा अनेक समस्याओं ,विड़म्बनाओं को अपनी खुली आँखों से देखा था और उन्हें अपने साहित्य में रूपायित करने में वे सफल हुए हैं ।

विद्यालंकार जी अपने नाटकों के माध्यम से मानवी व्यवहार पर नियंत्रण रखने हेतु शासन व्यवस्था, समाजव्यवस्था मजबूत करने, समाज में फैली भ्रष्टाचार–वृत्ति ,अमानवीयता तथा हिंसा की प्रवृत्ति को बदलने की संवेदना प्रकट करते हैं । उनकी इसी महत् लक्ष्य पूर्ति की महत् संवेदना मानव कल्याण के लिए उपयोगी और समाज में महान आदर्श भर देती है तथा मानव जीवन को स्वर्णिम भविष्य की ओर ले जाती है । इसी कारण उनकी संवेदना जीवंत नजर आती है । सामाजिक जीवन के चतुशाश्रम व्यवस्था में से तीनों आश्रमों का विद्यालंकार जी समर्थन करते हैं । अर्थात ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम तथा संन्यासाश्रम का उन्होंने सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान बताया है । जाति प्रथा , प्रांतीयता और भाषावाद जैसी कई बातें देश और समाज की एकता में तथा प्रगति में बाधा डालती हैं इसका संकेत उनके नाटकों में दृष्टिगोचर होता है । सामाजिक उत्थान एवं सांस्कृतिक संवर्धन के लिए उन्होंने सामाजिक आदर्श के विभिन्न पहलुओं को अर्थात माता–पिता का आदर्श, भाई–बहन का आदर्श , स्वामी–सेवक का आदर्श, अहिंसा ,त्याग, सेवाभाव, परोपकार , नैतिकता और ईमानदारी आदि की आवश्यकता एवं अनिवार्यता प्रतिपादित की है ।

विवेच्य नाटको में नाटककार की अपने समाज के प्रति धार्मिक एवं सांस्कृतिक संवेदना स्थान–स्थान पर पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होती है । इनमें धार्मिक मूलभूत सिद्धांत, आस्था, समाज की अर्थविषयक दृष्टि एवं स्थिति और बेरोजगारी आदि बातों पर पर्याप्त प्रकाश डाला है । नाटककारने अपने नाटकों में सामाजिक, संस्कृति और सभ्यता की रक्षा के लिए आदर्शवादी पात्रों का निर्माण किया है । इनके जरिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण का एक अभियान शुरू किया है । कला प्रेमी चंद्रगुप्त जी मानते हैं कि संस्कृति ,कला और शिल्प मनुष्य के जीवन में नया रंग भर देते हैं **तथा** राष्ट्र को प्रतिष्ठा प्राप्त कर देते हैं । इसलिए इनका रक्षण एवं संवर्धन होना आवश्यक है । विवेच्य नाटकों में सामाजिक, राजनीतिक अभिव्यंजना अनेक स्थानों पर परिलक्षित होती है । सामाजिक संवेदना विद्यालंकार जी के नाटकों का प्राण तत्त्व है ।

"विवेच्य नाटकों का शिल्पगत अध्ययन

चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के आधिकतर नाटकों के कथानक ऐतिहासिक घटना पर आधारित हैं । " अशोक " और " रेवा " नाटक को उन्होंने रंगमंच की दृष्टि से नहीं लिखा था । इन्हें लिखने का उनका मूल उद्देश्य पाठय–नाटक के रूप में ही था । " अशोक " नाटक की कथावस्तु सम्राट अशोक के साम्राज्यकालीन घटना पर आधारित है । यह नाटक पाँच अंकों में विभाजित है । प्रत्येक अंक में सात दृश्य हैं । कुल–मिलाकर इस नाटक में पैंतीस दृश्य है । विवेच्य नाटक में अंक,दृश्य और दृश्यान्तर की भरमार है । नाटककार की यह पहली कृति होने के कारण इसमें नाट्यतंत्र की दृष्टि से कुछ त्रुटियाँ जरूर हैं । अतः कहना न होगा कि इस नाटक के रंचनातंत्र पर नाटककार का ध्यान कम है । किंतु फिर भी कथावस्तु का निर्माण बहुत सुन्दर किया है । कथावस्तु को सुगठित बनाने में नाटककार काफी सफल है । कथावस्तु का ढाँचा बहुत आकर्षक है ।दूसरी रचना " रेवा " पहली से प्रौढ़ है । इसकी कथावस्तु इतिहासकालीन हिंदू सम्राटों की जीवन की कुछ सत्य घटना से संबंध रखती है । यह नाटक पाँच अंकों में विभाजित है । जिस प्रकार प्रथम कृति " अशोक " में अंक और दृश्य विभाजन समान रूप में था उस प्रकार " रेवा " में नहीं है । " रेवा " में इस दृष्टि से भिन्नता पायी जाती है । यथा – प्रथम अंक में तीन दृश्य,द्वितीय अंक में चार दृश्य , तृतीय और चतुर्थ अंक में पाँच–पाँच दृश्य तथा पाँचवें अंक में पाँच दृश्य विद्यमान हैं । कुलमिलाकर बाईस दृश्य हैं । इसके साथ कहीं–कहीं दृश्यान्तर का भी प्रयोग देखने को मिलता है ।

" न्याय की रात " तीन अकों में विभाजित है । इसमें कहीं भी दृश्य–दृश्यान्तर का प्रयोग नहीं है । रंगमंच की दृष्टि से लिखा गया और मंचमें काफी सफलता पानेवाला यह सामाजिक राजनीतिपरक नाटक है । जो आधुनिक काल से संबंधित है । "अशोक " और " रेवा " ऐतिहासिक आदर्शप्रधान नाटक की कोटि में आते हैं तो " न्याय की रात " सामाजिक–राजनीतिक नाटक की कोटि में आता है । तीनों नाटकों के कथानक बोधपरक एवं संवेदना को जगाने का काम करते हैं ।

इन नाटकों का चरित्र–शिल्प नाटयनुकूल है । नाटककार को चरित्र निर्मिति में काफी सफलता मिली हैं । इनके अधिकांश पात्र आदर्शवादी हैं जो घटना, परिस्थिति , देश–काल–वातावरण तथा परिवेश के अनुकूल नजर आते हैं । ये पात्र आदर्शवादी , महत्त्वाकांक्षी, भारतीय संस्कृति के प्रतीक के रूप में सामने आते हैं । इन नाटकों के पुरूष एवं नारी पात्र अपना समान प्रभाव समाज पर डालते हैं । ये चरित्र नाटककार के निश्चित उद्देश्य की पूर्ति करते हैं ।संवाद–शिल्पकी दृष्टि से भी ये नाटक सफल हैं । इन नाटकों के संवादों में निज की सुन्दरता ,श्रेष्ठता एवं आकर्षकता है जो कथानक और चरित्रों को सबल बनाते हैं । कथा को गति देनेवाले पात्रों के अंतर्द्वद्व को स्पष्ट करनेवाले , सहज, स्वाभाविक ,संक्षिप्त ,चुटिले एवं अर्थगर्भित संवाद देखने को मिलते हैं । ऐतिहासिक कोटि के नाटकों में कुछ संवाद काफी लम्बे हैं फिर भी वे कथावस्तु में बाधा नहीं डालते । दार्शनिक एवं उपदेशात्मक संवाद इन नाटकों की अपनी विशेषता है । इसके साथ ही व्यंग्यात्मक, पात्रानुकूल और प्रतीकात्मक संवाद भी देखनेको मिलते है ।

" अशोक "और " रेवा " नाटक ऐतिहासिक वातावरण की पृष्ठभूमि पर लिखे हुए होने के बावजूद भी आधुनिक परिवेश की विड़म्बना को स्पष्ट करने में सक्षम हैं अतः निश्चित उद्देश्य की पूर्ति वातावरण के जरिए प्रकट होती है । इनमें आधुनिकता बोध दर्शाने की पूर्ण क्षमता है । देश–काल–वातावरण के अनुरूप पात्र तथा पात्रों की भाषा का गठन नाटककारने सफलता के साथ किया है । " न्याय की रात " आधुनिक दुषित सामाजिक तथा राजनीतिक वातावरण को रू–ब–रू करता है ।रंगमंच सज्जा तथा संकलनत्रय की ओर नाटककार का ध्यान अवश्य रहा है । वातावरण शिल्प की दृष्टि नाटककार को काफी सफलता प्राप्त है । " अशोक " और "रेवा " नाटक रंगमंच की दृष्टि से न लिखे जाने के बावजूद भी नाटककारने रंगमंच संबंधी अनुकूल तथा अत्यावश्यक सूचना का पालन किया है । " न्याय की रात " के रंगमंचीय प्रयोग सफल हुए हैं । आधुनिक

तंत्रज्ञान के आधार पर " अशोक " और " रेवा " जैसे पाठय–नाटक भी आज रंगमंच पर सफल सिद्ध हो सकते हैं । इन नाटकों में रूपसज्जा, वेशभूषा, दृश्यसज्जा ,प्रकाशयोजना,ध्वनि एवं संगीत संयोजन नाटयतंत्र के अनुकूल है । इन नाटकों की पात्र–योजना अभिनय के अनुकूल है । नाटककार ने बीच–बीच में अभिनय संबंधी निर्देश भी दिए हैं ।

चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के नाटक भाषा–शिल्प की दृष्टि से नाटयानुकूल हैं । विवेच्य नाटकों की भाष पात्रों की योग्यतानुसार, नाटकीय, सुस्पष्ट एवं सरल है । विवेच्य नाटकों में व्यंग्यात्मक , प्रतीकात्मक ,वर्णनात्मक तथा काव्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है ।इसके साथ–साथ मुहावरों ,कहावतों एवं सुक्तियों से युक्त भाषा का भी प्रयोग है । पात्रों की भाषा में विभिन्न भाषा के शब्दों का भी प्रभाव है । आधुनिक परिवेश का चित्रण करनेवाले " न्याय की रात " नाटक के पात्रों की भाषा पर अंग्रेजी का प्रभाव है । इन नाटकों का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता अखंड़ता का निर्माण ,सामाजिक सुव्यवस्था एवं सांस्कृतिक प्रचार–प्रसार तथा कला और सभ्यता का विकास रहा है । ये नाटक समाज में नीतिमूल्यों की प्रतिष्ठापना " वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना ,वर्गहीन समाज की प्रतिष्ठापना तथासमाज में आदर्श स्थापित करने के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं । इन नाटकों के शीर्षक मार्मिक , संक्षिप्त, आकर्षक एवं विषयवस्तु के अनुकूल हैं । चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के पाठय-नाटक और रंगमंचीय नाटक शिल्प की दृष्टि से सफल हैं ।

चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के नाटकों का संवेदनागत तथा शिल्प गत अध्ययन करने के पश्चात जो उपलब्धियाँ सामने आती हैं वे इस प्रकार हैं––

1 चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी राष्ट्रीय नवनिर्माण हेतु समाज में आदर्श, नीतिमूल्य और संस्कार जगाने में आग्रहशील है । वे इस पुननिर्माण में युवकों पर ज्यादा भरोसा रखते है ।

2 आजादी प्राप्ति के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में मर मिटनेवालें देशप्रेमियों की जितनी आवश्यकता थी आज वह राष्ट्रीय नवनिर्माण हेतु उतनी ही है ।

3 चंद्रगुप्त जी राष्ट्रीय सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था में साफ–सुथरा पन एवं सुधार की आवश्यकताओं का प्रतिपादन करते हुए भारतीय परिवर्तित मानसिकता पर हृदय परिवर्तन की भावना से काम करना चाहते है । तात्पर्य यह कि संवेदनाहीन समाज में संवदेना जगाने का प्रयत्न करते है ।

4 नाटककार सामाजिक, सांस्कृतिक दोषों को, जमा हुए कुड़े–कबाड़ को हटाकर कला, संस्कृति और सभ्यता की लेन–देन के प्रति आग्रही है ।

5 चंद्रगुप्त जी के नाट्य–साहित्य में राष्ट्र तथा संस्कृति प्रेम बेजोड़ है ।

6 भ्रष्टाचार का हिमनग खड़ा करनेवाला, षड़यंत्रकारी, पाखण्डी हिंसक प्रवृत्ति के हेमंत जैसे जबरदस्त और प्रासंगिक चरित्र का निर्णाण अन्य नाटकों में दुर्लभ है जो आज का यथार्थ भी है । क्योंकि हेमंत पूरे हिंदुस्तान में फैला है जिसकी पहचान विवेच्य नाटकों से होती है ।

7 चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी समाज परिवर्तन हेतु आज भी म. गांधी तथा बुद्ध जैसे आदर्शवादी महामानव की आवश्यकता बताते हैं जिनके प्रभाव स्वरूप बिगड़े हुए हिंसक समाज का हृदयपरिर्वतन हो सके उसे सच्चा रास्ता बता सके ।

8 चंद्रगुप्त जी के पाठय–नाटक भी अपने निश्चित उद्देश्य की पूर्ति में सफल है ।जो तकनिकी सुविधाओं के कारण रंगमंच पर भीसफल हो सकते हैं ।

अनुसंधान की नयी दिशाएँ

चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के साहित्य पर निम्न दिशाओं में स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य किया जा सकता है ––

1 चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना ।

2 चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के समग्र साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का अनुशीलन ।

3 चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी के नाटकों में चित्रित संस्कृति ।

4 चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी की कहानियों का कथ्य और शिल्प ।

यहाँ पर मेरे विषय की सीमा है ।शायद आनेवाले शोधार्थी उपर्युक्त विषयों पर शोधकार्य करेंगे ।